छत्तीसगढ़ विधान सभा
की
अशोधित कार्यवाही

पंचम विधान सभा **द्वितीय सत्र**

शुक्रवार, दिनांक 12 जुलाई, 2019

(आषाढ़ 21, शक सम्वत् 1941)

[अंक 01]

कार्यालय प्रति

विधान सभा के पदाधिकारी

अध्यक्ष	डॉ. चरणदास महंत
सचिव	श्री चन्द्रशेखर गंगराड़े

असंशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

माननीय राज्यपाल

श्रीमती आनंदीबेन मफतभाई पटेल

मंत्रिमण्डल के सदस्यों की सूची

01.	श्री भूपेश बघेल, मुख्यमंत्री	सामान्य प्रशासन, वित्त, ऊर्जा, खनिज साधन, जन सम्पर्क, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी एवं अन्य विभाग जो किसी मंत्री को आवंटित ना हो.
02.	श्री टी.एस. सिंहदेव, मंत्री	पंचायत एवं ग्रामीण विकास, लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, चिकित्सा शिक्षा, 20 सूत्रीय कार्यान्वयन, वाणिज्यिक कर (जी.एस.टी.)
03.	श्री ताम्रध्वज साहू, मंत्री	लोक निर्माण, गृह, जेल, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व, पर्यटन
04.	श्री रविन्द्र चौबे, मंत्री	संसदीय कार्य, कृषि एवं जैव प्रौद्योगिकी, पशुधन विकास, मछली पालन, जल संसाधन एवं आयाकट
05.	डॉ.प्रेमसाय सिंह टेकाम, मंत्री	स्कूल शिक्षा, आदिम जाति तथा अनुसूचित जाति विकास, पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक विकास, सहकारिता
06.	श्री मोहम्मद अकबर, मंत्री	परिवहन, आवास एवं पर्यावरण, वन, विधि और विधायी कार्य
07.	श्री कवासी लखमा, मंत्री	वाणिज्यिक कर (आबकारी), वाणिज्य एवं उद्योग
08.	डॉ.शिवकुमार डहरिया, मंत्री	नगरीय प्रशासन एवं विकास, श्रम
09.	श्री अमरजीत भगत, मंत्री	खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण, योजना आर्थिक एवं सांख्यिकी, संस्कृति
10.	श्रीमती अनिला भेंडिया, मंत्री	महिला एवं बाल विकास एवं समाज कल्याण
11.	श्री जयसिंह अग्रवाल, मंत्री	राजस्व एवं आपदा प्रबंधन, पुनर्वास,वाणिज्यिक कर (पंजीयन एवं मुद्रांक)
12.	श्री गुरू रूद्र कुमार, मंत्री	लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी एवं ग्रामोद्योग
13.	श्री उमेश पटेल, मंत्री	उच्च शिक्षा, कौशल विकास, तकनीकी शिक्षा एवं रोजगार, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, खेल एवं युवा कल्याण

अप्रकाशित/प्रकाशन के लिये नहीं

सदस्यों की वर्णात्मक सूची
(निर्वाचन क्षेत्र का नाम तथा क्रमांक सहित)

अ

01.	अजय चन्द्राकर	57-कुरूद
02.	अमरजीत भगत	11-सीतापुर (अ.ज.जा.)
03.	अरूण वोरा	64-दुर्ग शहर
04.	अजीत जोगी	24-मरवाही (अ.ज.जा.)
05.	अनिता योगेंद्र शर्मा	47-धरसींवा
06.	अनिला भेंडिया, श्रीमती	60-डौंडी लोहारा (अ.ज.जा.)
07.	अंबिका सिंहदेव, श्रीमती	03-बैकुंठपुर
08.	अमितेश शुक्ल	54-राजिम
09.	अनूप नाग	79-अंतागढ़ (अ.ज.जा.)
10.	आशीष कुमार छाबड़ा	69-बेमेतरा

इ

01.	इंद्रशाह मण्डावी	78-मोहला-मानपुर (अ.ज.जा.)
02.	इंदू बंजारे	38-पामगढ़ (अ.जा.)

उ

01.	उत्तरी गनपत जांगड़े	17-सारंगढ़ (अ.जा.)
02.	उमेश पटेल	18-खरसिया

क

01.	कवासी लखमा	90-कोन्टा (अ.ज.जा.)
02.	कृष्णमूर्ति बांधी	32-मस्तूरी (अ.जा.)
03.	किस्मत लाल नंद	39-सरायपाली (अ.जा.)
04.	कुलदीप जुनेजा	50-रायपुर नगर उत्तर
05.	कुंवर सिंह निषाद	61-गुण्डरदेही
06.	केशव प्रसाद चन्द्रा	37-जैजेपुर

ख

01	खेलसाय सिंह	04-प्रेमनगर

असंशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

ग

01.	गुरू रूद्र कुमार	67-अहिवारा (अ.जा.)
02.	गुरूदयाल सिंह बंजारे	70-नवागढ़ (अ.जा.)
03.	गुलाब कमरो	01-भरतपुर-सोनहत (अ.ज.जा.)

च

01.	चक्रधर सिंह सिदार	15-लैलूंगा (अ.ज.जा.)
02.	चरणदास महंत	35-सक्ती
03.	चंदन कश्यप	84-नारायणपुर (अ.ज.जा.)
04.	चंद्रदेव प्रसाद राय	43-बिलाईगढ़ (अ.जा.)
05.	चिन्तामणी महाराज	08-सामरी (अ.ज.जा.)

छ

01.	छन्नी चंदू साहू	77-खुज्जी

ज

01.	जयसिंह अग्रवाल	21-कोरबा

ट

01.	टी.एस.सिंहदेव	10-अम्बिकापुर

ड

01.	डमरूधर पुजारी	55-बिन्द्रानवागढ़ (अ.ज.जा.)

त

01.	ताम्रध्वज साहू	63-दुर्ग ग्रामीण

द

01.	दलेश्वर साहू	76-डोंगरगांव
02.	द्वारिकाधीश यादव	41-खल्लारी
03.	देवव्रत सिंह	73-खैरागढ़
04.	देवेंद्र यादव	65-भिलाई नगर
05.	देवेंद्र बहादुर सिंह	40-बसना

असंशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

ध

01.	धरमलाल कौशिक	29-बिल्हा
02.	धनेन्द्र साहू	53-अभनपुर
03.	धर्मजीत सिंह	26-लोरमी

न

01.	ननकीराम कंवर	20-रामपुर (अ.ज.जा.)
02.	नारायण चंदेल	34-जांजगीर-चांपा

प

01.	प्रकाश शक्राजीत नायक	16-रायगढ़
02.	प्रमोद कुमार शर्मा	45-बलौदाबाजार
03.	पारसनाथ राजवाड़े	05- भटगांव
04.	प्रीतम राम, डा.	09-लुण्ड्रा (अ.ज.जा.)
05.	पुन्नूलाल मोहले	27-मुंगेली (अ.जा.)
06.	पुरूषोत्तम कंवर	22-कटघोरा
07.	प्रेमसाय सिंह टेकाम, डॉ.	06-प्रतापपुर (अ.ज.जा.)

ब

01.	बृजमोहन अग्रवाल	51-रायपुर नगर(दक्षिण)
02.	बृहस्पत सिंह	07-रामानुजगंज (अ.ज.जा.)

भ

01.	भुनेश्वर शोभाराम बघेल	74-डोंगरगढ़ (अ.जा.)
02.	भूपेश बघेल	62-पाटन

म

01.	ममता चंद्राकर	71-पण्डरिया
02.	मनोज सिंह मण्डावी	80-भानुप्रतापपुर (अ.ज.जा.)
03.	मोहन मरकाम	83-कोण्डागांव (अ.ज.जा.)
04.	मोहित राम	23-पाली-तानाखार(अ.ज.जा.)
05.	मोहम्मद अकबर	72-कवर्धा

असंशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

य

01.	यू.डी.मिंज	13-कुनकुरी (अ.ज.जा.)

र

01.	रजनीश कुमार सिंह	31-बेलतरा
02.	रंजना डीपेंद्र साहू	58-धमतरी
03.	रमन सिंह, डॉ.	75-राजनांदगांव
04.	रामकुमार यादव	36-चंद्रपुर
05.	रामपुकार सिंह ठाकुर	14-पत्थलगांव (अ.ज.जा.)
06.	रविन्द्र चौबे	68-साजा
07.	रश्मि आशीष सिंह	28-तखतपुर
08.	रेखचंद जैन	86-जगदलपुर
09.	रेणु अजीत जोगी, डॉ. (श्रीमती)	25-कोटा

ल

01.	लक्ष्मी ध्रुव, डॉ.	56-सिहावा (अ.ज.जा.)
02.	लखेश्वर बघेल	85-बस्तर (अ.ज.जा.)
03.	लालजीत सिंह राठिया	19-धरमजयगढ़ (अ.ज.जा.)

व

01.	विक्रम मण्डावी	89-बीजापुर (अ.ज.जा.)
02.	विनय जायसवाल, डॉ.	02-मनेन्द्रगढ़
03.	विनय कुमार भगत	12-जशपुर (अ.ज.जा.)
04.	विद्यारतन भसीन	66-वैशाली नगर
05.	विकास उपाध्याय	49-रायपुर नगर पश्चिम
06.	विनोद सेवन लाल चंद्राकर	42-महासमुन्द

श

01.	शकुन्तला साहू	44-कसडोल
02.	शिवरतन शर्मा	46-भाटापारा
03.	शिवकुमार डहरिया, डॉ.	52-आरंग (अ.जा.)
04.	शिशुपाल सोरी	81-कांकेर (अ.ज.जा.)

असंशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

05.	शैलेष पाण्डेय	30-बिलासपुर

स

01.	सत्यनारायण शर्मा	48-रायपुर ग्रामीण
02.	संतराम नेताम	82-केशकाल (अ.ज.जा.)
03.	संगीता सिन्हा	59-संजारी बालोद
04.	सौरभ सिंह	33-अकलतरा

असंशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

छत्तीसगढ़ विधान सभा

शुक्रवार, दिनांक 12 जुलाई, 2019

(आषाढ़-21, शक संवत् 1941)

विधान सभा पूर्वाह्न 11:00 बजे समवेत हुई

(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए)

राष्ट्रगीत

अध्यक्ष महोदय :- अब राष्ट्रगीत "वंदे मातरम्" होगा । माननीय सदस्यों से अनुरोध है कि वे राष्ट्रगीत के लिये कृपया अपने स्थान पर खड़े हो जायें ।

(राष्ट्रगीत "वंदे मातरम्" की धुन बजाई गई)

समय :

11:01 बजे

निधन का उल्लेख

(1) श्री संतोष कुमार अग्रवाल, पूर्व सदस्य, अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा।

(2) श्री भीमा मण्डावी, सदस्य, छत्तीसगढ़ विधान सभा ।

(3) श्री बलराम सिंह ठाकुर, पूर्व सदस्य, छत्तीसगढ़ विधान सभा ।

अध्यक्ष महोदय :- मुझे सदन को सूचित करते हुए अत्यंत दु:ख हो रहा है कि अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा के पूर्व सदस्य, श्री संतोष कुमार अग्रवाल जी का दिनांक 14 मार्च, 2019, छत्तीसगढ़ विधान सभा के सदस्य, श्री भीमा मण्डावी का दिनांक 9 अप्रेल, 2019 तथा छत्तीसगढ़ विधान सभा के पूर्व सदस्य, श्री बलराम सिंह ठाकुर का दिनांक 30 अप्रेल, 2019 को निधन हो गया है ।

श्री संतोष कुमार अग्रवाल का जन्म 1 अगस्त सन् 1931 को पुरानी बस्ती, रायपुर में हुआ था । आप कृषि उपज मंडी, महासमुंद तथा महासमुंद जनपद पंचायत के अध्यक्ष रहे । आप सन् 1990 में महासमुंद विधान सभा क्षेत्र से अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा के लिये विधायक निर्वाचित हुए । आपकी धार्मिक तथा सामाजिक कार्यों में विशेष अभिरूचि थी ।

आपके निधन से प्रदेश ने एक अनुभवी राजनीतिज्ञ तथा समाजसेवी को खो दिया है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री भीमा मण्डावी का जन्म 30 सितम्बर सन् 1978 को ग्राम-गदापाल, जिला-दंतेवाड़ा में हुआ था । आपका मुख्य व्यवसाय कृषि था । आप विद्यार्थी जीवन से ही राजनीति में सक्रिय रहे । आप पंचायत सचिव रहे । आप भारतीय जनता पार्टी की टिकिट पर प्रथम बार सन् 2008 में दंतेवाड़ा विधान सभा क्षेत्र से छत्तीसगढ़ विधान सभा के लिये विधायक निर्वाचित हुए तथा दूसरी बार सन् 2018 में दंतेवाड़ा विधान सभा क्षेत्र से ही भारतीय जनता पार्टी की टिकिट पर छत्तीसगढ़ की पंचम विधान सभा के लिये विधायक निर्वाचित हुए । आपकी सामाजिक कार्यों में विशेष अभिरूचि थी । आप अपने क्षेत्र के सर्वांगीण विकास के लिये सतत् प्रयत्नशील रहे । आपने सहज, सरल, मृदुभाषी एवं जागरूक जनप्रतिनिधि के रूप में छत्तीसगढ़ विधान सभा में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई थी ।

आपके निधन से प्रदेश ने एक जननेता तथा समाजसेवी को खो दिया है ।

श्री बलराम सिंह ठाकुर का जन्म 1 जुलाई सन् 1939 को ग्राम-नेवरा, जिला-बिलासपुर में हुआ था । आपका मुख्य व्यवसाय कृषि था । आपने एम.ए., एल.एल.बी. तक की शिक्षा प्राप्त की थी तथा आप प्रारंभ से ही राजनीति में सक्रिय रहे और छात्र संघ के अध्यक्ष बने । आप नगर निगम, बिलासपुर के पार्षद तथा दो बार महापौर रहे । आप प्रथम बार सन् 1996 में तखतपुर विधान सभा क्षेत्र से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी की टिकिट पर अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा के लिये विधायक निर्वाचित हुए तथा दूसरी बार आप सन् 2003 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी की टिकिट पर ही छत्तीसगढ़ की द्वितीय विधान सभा के लिये विधायक निर्वाचित हुए । आप जिला कृषि एवं ग्रामीण बैंक तथा छत्तीसगढ़ राज्य कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक के संचालक रहे तथा रतनपुर महामाया मंदिर ट्रस्ट के आजीवन अध्यक्ष भी थे । आप अपने क्षेत्र के बहुमुखी विकास के लिये हमेशा प्रयत्नशील रहे ।

आपके निधन से प्रदेश ने एक वरिष्ठ राजनीतिज्ञ, समाजसेवी को खो दिया है।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, दाऊ संतोष अग्रवाल जी सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्रों में लम्बे समय तक सक्रिय रहे । सरपंच से लेकर जनपद अध्यक्ष एवं विधान सभा तक विभिन्न पदों को सुशोभित किया । वे मध्यप्रदेश विधान सभा के सदस्य थे । वे 10 वर्षों तक मण्डी के अध्यक्ष रहे । आज उनके नहीं रहने से छत्तीसगढ़ को अपूर्णीय क्षति हुई है ।

भाई भीमा मण्डावी जो इस सदन के सदस्य थे । उनसे आखिरी बार इसी सदन में मुलाकात हुई थी । उनके जाने से निश्चित एक अपूर्णीय क्षति न केवल आदिवासी समाज को, बल्कि सदन की भी क्षति हुई है । 1976 में उनका जन्म हुआ, स्नातक तक की उनकी पढ़ाई हुई और वे कबड्डी के अच्छे खिलाड़ी भी थे । ग्राम पंचायत गदापाल के सचिव के रूप में अपने कैरियर की शुरूआत की थी । 30 साल की उम्र में उन्होंने पहली बार विधान सभा में प्रवेश किया । दो बार विधान सभा दंतेवाड़ा से

असंशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

निर्वाचित हुए । बहुत दुखद घटना घटी, चुनाव के दौरान नक्सली हमले उनकी मृत्यु हुई है । वे बहुत ही सहज, सरल एवं मिलनसार व्यक्तित्व के धनी थे । एक नवजवान जनप्रतिनिधि, जिनसे बहुत सारी अपेक्षाएं थीं । आज वे हमारे बीच नहीं रहे, यह एक अपूर्णीय क्षति है । मैं उनके पूरे परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करता हूं ।

ठाकुर बलराम सिंह जी, इस सदन के 2 बार सदस्य रहे । दोनों बार उनके साथ काम करने का अवसर मुझे मिला था । यदि बलराम सिंह जी के व्यक्तित्व को देखें तो हम कह सकते हैं कि निमगा छत्तीसगढ़िया की उनकी पहचान रही है । वे बहुत ही सहज, सरल और मिलनसार रहे हैं । वे किसी भी विषय पर स्पष्ट विचार व्यक्त करते थे और बेबाकी से अपनी बात कहते थे । वे दो बार महापौर रहे, दो बार विधायक भी रहे । हम लोग अक्सर उनसे मिलते थे और हमेशा हम लोगों को उनसे पुत्रवत् स्नेह मिला । जब वे बीमार थे उस समय हम लोग हॉस्पीटल में उनसे मिलने गए तो उस समय भी वे हमने हंसते हुए मिले । ऐसे व्यक्ति के जाने से निश्चित रूप से एक अपूर्णीय क्षति हुई है । मैं उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं और तीनों दिवंगतों को अपनी ओर से श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं ।

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरम लाल कौशिक) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री संतोष कुमार अग्रवाल जी हमारे बीच नहीं रहे । जैसा कि हम सबको विदित है कि महासमुंद विधान सभा क्षेत्र से 1990 से 93 तक विधायक के रूप में उन्हें कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ । स्वाभाविक रूप से एक जनप्रतिनिधि होने के नाते उस विधान सभा के विकास एवं वहां के लोगों के जीवन की समस्याओं के निराकरण और उसके साथ ही साथ एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में उनकी जो छवि रही, इसीलिए उनको दाऊ की उपाधि भी दी गई। उनके साथ में दाऊ शब्द जुड़ गया। ऐसे लोकप्रिय व्यक्ति को हमने खोया है। निश्चित रूप से हमारे लिए यह अपूर्णीय क्षति है। भीमा मंडावी जी हमारे सदन के दो बार सदस्य रहे। मैं हमेशा विधायक भीमा मंडावी की वीरता का कायल रहूंगा। वे अपने जीवन के अंतिम क्षणों तक समाज के अंतिम व्यक्ति तक अंत्योदय की स्थापना के लिए सक्रिय रहे। नक्सलवाद के खिलाफ एक बड़ी लड़ाई लड़ते हुए उन्होंने अपने प्राणों की आहुति दी है। वे हर युग में नक्सलवाद के खिलाफ लड़ी जाने वाली वीरगाथा के नायक के रूप में याद किये जायेंगे। माननीय अध्यक्ष महोदय, इस लोकतंत्र का महापर्व चल रहा था और इस लोकतंत्र के महापर्व को जो चुनौती देने वाले लोग थे, उसको स्वीकार करते हुए श्यामगिरी गांव जहां पर मेला लगा हुआ था, वे उस मेले में गये और वहां पर मेले में पूजा-अर्चना करने के बाद जब वे लौट रहे थे तो नक्सलवाद के द्वारा उनको शिकार बनाया गया। यदि उनके जीवन को देखेंगे तो एक छोटे से गांव गदापाल में उनका जन्म हुआ। उनकी शिक्षा-दीक्षा हुई। शिक्षा-दीक्षा के बाद दंतेश्वरी महाविद्यालय में उनकी बी.ए. की शिक्षा हुई और उसके बाद उन्होंने अपने सामाजिक जीवन के प्रारंभिक दिनों में सचिव और सचिव संघ के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने काम किया। उनकी समस्याओं के लिए वे हमेशा लड़ते रहे। फिर उसके बाद वर्ष

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

2008 में वे विधायक बने। किसानों के प्रति उनका लगाव था। उस दौरान वहां ऐसी परिस्थितियां थीं। ऐसे कई मामले लंबित रहे, जिनको लेकर उनको लड़ाई लड़नी पड़ी और किसानों के मुआवजे के लिए, बाकी चीजों के लिए, वनवासियों के लिए उन्होंने अपना योगदान दिया। साथ ही साथ सरकार की जो योजनाएं हैं, उन योजनाओं का लाभ अपने क्षेत्र में लोगों को कैसे मिल सके, इसके लिए हमेशा वे चिंतित रहें और चिंतित रहकर उन्होंने उस लाभ को दूर-दराज तक पहुंचाने का काम किया। यदि आप उनके जीवन को देखेंगे तो वे निश्चित रूप से एक मृदुभाषी रहे। हमारे विधायक दल के उपनेता के रूप में उन्हें काम करने का अवसर प्राप्त हुआ। उन्होंने हमारे संगठन में जिलाध्यक्ष के रूप में काम किया। उन्होंने प्रदेश मंत्री के रूप में कार्य किया। हमारे राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति के मोर्चा के मंत्री के रूप में उन्होंने एक अवसर प्राप्त किया और लगातार हमेशा वनवासियों के बीच में, क्षेत्रवासियों के बीच में, समाज के बीच में वे बने रहें। जहां पर उनकी आवश्यकता पड़ी, वे उसके लिए संषर्घ करने में कभी भी पीछे नहीं रहे। ऐसे व्यक्ति यदि आज रहते तो निश्चित रूप से उस क्षेत्र के विकास में, उस क्षेत्र की जो समस्याएं हैं, उनको दूर करने में उनकी अहम भूमिका होती। आज बड़े ही द्रवित हृदय से इस श्रद्धांजलि में जो हम लोग स्मरण कर रहे हैं, वह दिखाई दे रहा है। उन्होंने अपने आपको कहा कि चाहे जो भी हो जाए, मेरा जीवन चला जाए, उनको धमकी भी मिली लेकिन उन्होंने अपने जीवन में इसकी परवाह नहीं की। आज हमने ऐसे साथी को खोया है, जिसके लिए आज हम लोग यहां पर श्रद्धासुमन अर्पित कर रहे हैं। ठाकुर बलराम सिंह जी और हम लोगों का काफी निकट का संबंध रहा। वे मध्यप्रदेश में उपचुनाव में जीतकर गये थे और उसके बाद छत्तीसगढ़ में पुन: 2003 में इस विधान सभा में सदस्य के रूप में निर्वाचित होकर आये। उनका राजनीतिक जीवन छात्र जीवन से ही प्रारंभ हो गया था और एक नेतृत्व का जो गुण होना चाहिए, निश्चित रूप से उनमें कूट-कूट कर भरा हुआ था। पार्षद का चुनाव, मेयर बनना। दो बार बिलासपुर में महापौर के रूप में सेवा करने का उन्हें अवसर प्राप्त हुआ। उसके साथ ही साथ आज महामाया आदिशक्ति की जो रतनपुर नगरी है, यदि वहां के विकास को देखेंगे तो उसमें उनकी अहम भूमिका है। हम वहां पर उन दिनों से जा रहे हैं, जब वहां पर बैठने की भी व्यवस्था नहीं थी, लेकिन समाज को जोड़कर, सब प्रबुद्ध लोगों को मिलाकर प्रयास किया और आज एक बड़ी पहचान उस नगरी को मिली है। जिसमें हम लोगों ने उनका व्यक्तित्व, कृतत्व के साथ-साथ उनके अध्यात्म, धार्मिक सभी भावों को हम लोगों ने देखा है, करीब से देखा है। वे लगातार क्षेत्र के प्रति जुझारू रहे, संघर्षशील रहे, उस क्षेत्र के विकास में उनकी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वहां के छोटे से छोटे कार्यों में भी उनकी चिंता रही है। ऐसे व्यक्ति को खोना निश्चित रूप से आज भर पाना हम सबके लिए संभव नहीं है। आज द्रवित मन से माननीय मुख्यमंत्री जी के माताश्री बिन्देश्वरी देवी का निधन हो गया है। यह हम सबके लिए अपूरणीय क्षति है। मां का महत्व हम सबने अपने जीवन में देखा है, समझा है, हमने उनके ममत्व को जाना है। उनकी अध्यात्म, धर्म और समाज में रूचि रही है, भूमिका रही है। ऐसे

Uncorrected and unedited/Not for Publication

असमय पर खो देना निश्चित रूप से न केवल परिवार के लिए, हम सबके लिए अपूरणीय क्षति है। मैं भीमा मण्डावी के साथ ही साथ उनके जो सुरक्षा गार्ड शहीद हुए, आज के इस अवसर पर ऐसे मृतक आत्मा को हम यहां पर सभी को श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं और भगवान से यही प्रार्थना करते हैं कि उनको अपने चरणों में स्थान दें और वे सदगति को प्राप्त हों।

श्री अजीत जोगी (मरवाही) :- सम्माननीय अध्यक्ष महोदय, सदन के सम्मानित नेता और सम्मानित नेता प्रतिपक्ष के स्वर में स्वर मिलाते हुए मैं विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहता हूँ। आदरणीय स्वर्गीय भाई संतोष अग्रवाल जी को जो महासमुन्द से विधायक रहे। स्वर्गीय हमारे छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश के वरिष्ठतम नेता आदरणीय श्यामाचरण जी शुक्ल और आदरणीय विद्याचरण जी शुक्ल के साथ कंधे से कंधा मिलाकर उन्होंने महासमुन्द के विकास में अभूतपूर्व योगदान दिया। वे सामाजिक रूप से भी बहुत सक्रिय थे। वे न केवल अग्रवाल समाज में, किन्तु महासमुन्द के विभिन्न समाजों में हमेशा बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। मैं स्वयं महासमुन्द का सांसद रहा तो उनके किए हुए कार्यों को लोग सदैव स्मरण करते थे। वे बड़े मृदुभाषी होने के कारण अंत तक लोकप्रिय रहे। मैं उन्हें अपनी विनम्र श्रद्धांजलि देता हूँ।

भाई भीमा मण्डावी इस सदन में मेरे सामने ही बैठते थे। बहुत पुरानी पहचान तो थी, परन्तु निकटता तब आई जब हम दोनों एक दूसरे के इतने निकट बैठने लगे। मैंने पाया कि उनमें आदिवासियों के प्रति, विशेषकर दक्षिण बस्तर के आदिवासियों के प्रति जो उनकी समस्याओं और कठिनाईयों का ज्ञान था। उनका निराकरण करने के लिए उनकी जो भावनाएं थीं, वे एक सच्चे और कर्मठ आदिवासी के दिल की अर्न्ततम गहराईयों से आती थी। मेरे पास बैठने वाले और आदिवासियों की सेवा में जिन्होंने शहादत दी, नक्सलवाद का सामना करते हुए बहादुरी से समर्पण न करके ऐसी शहादत दी, जो सदैव स्मरण की जायेगी । मैं उनको अपनी सादर श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आदरणीय स्वर्गीय ठाकुर बलराम सिंह जी आपके, मेरे जिले के थे । मैं सोचता हूं कि उनके जाने से बिलासपुर की राजनीति का एक बहुत मजबूत स्तंभ गिर गया है । बिलासपुर की राजनीति में बलराम सिंह जी के बिना कुछ भी सोचना, कुछ भी विचारना, कुछ भी करना किसी के लिए संभव नहीं था । उनका व्यक्तित्व इस तरह से पूरे क्षितिज पर छाया हुआ था चाहे वह राजनीति हो, चाहे वह नगर निगम हो, चाहे वह विधान सभा हो, वहां तो उनका योगदान रहा, वे सहकारिता के क्षेत्र में बहुत ऊंचाइयों तक पहुंचने वाले महापुरूष थे और मुझे स्मरण आता है, जब मैं मुख्यमंत्री था, जिस तरह से वे बड़ी सुरूचिपूर्ण छत्तीसगढ़ी में बात करते थे और लगता था कि छत्तीसगढ़ी भाषा पर, छत्तीसगढ़ी संस्कृति पर उनका सम्पूर्ण अधिकार था और मुझे गलत न समझा जाये तो मैं ये कहना चाहूंगा कि जब वे बोलते थे तो बीच-बीच में छत्तीसगढ़ की एक-दो मीठी गालियां

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

भी आ जाती थीं और कोई उसका बुरा भी नहीं मानता था । मैं रतनपुर के महामाया मंदिर में बचपन से जाता रहा हूं । मैंने उसके उस स्वरूप को भी देखा है, जो एक छोटा सा मंदिर था और आसपास के ही कुछ गांव के लोग वहां जाया करते थे । जब से ठाकुर बलराम सिंह जी ने उस मंदिर के नेतृत्व को ट्रस्टी के रूप में, अध्यक्ष के रूप में संभाला तो कोई कल्पना भी नहीं कर सकता है । मैंने 60 वर्षों के अंतराल में उस मंदिर को, उस मंदिर परिसर को आमूलचूल परिवर्तित होते हुए देखा है और उसका श्रेय अगर किसी एक व्यक्ति को दिया जा सकता है तो वे ठाकुर बलराम सिंह जी थे । महामाया माता पर उनकी ऐसी आस्था थी, हम सब चुनाव लड़ते हैं, गणना होती है, तो हम सब गणना स्थल के आसपास रहते हैं, पर वे ऐसे व्यक्ति थे कि जब चुनाव की गणना हो रही थी तो उन्हें महामाया जी के चरणों पर पाया जाता था । धर्म के प्रति ऐसी श्रद्धा, आध्यात्म के प्रति ऐसी श्रद्धा और मां महामाया के प्रति ऐसी श्रद्धा ठाकुर बलराम सिंह जी से बढ़कर मैंने कभी नहीं देखी है । हमारे सदन के नेता सम्मानीय मुख्यमंत्री जी की माता श्री का दु:खद निधन हुआ है । मैं पूरे सदन के साथ उनको विनम्र श्रद्धांजलि देता हूँ । व्यक्तिगत रूप से शायद मैं उनसे एक-दो बार ही आमने-सामने हुआ । पर मैं यह कह सकता हूँ कि वह एक आदर्श माता थी । मातृत्व का भाव, मातृत्व की सदभावना, धर्म में निष्ठा, परिवार को चलाने की धुरी बनकर, परिवार की स्थिति ऐसी थी कि वही परिवार की मुख्य धुरी थी और उन्हीं के आसपास इर्द-गिर्द पूरा परिवार, जैसा हम देख रहे हैं, इन ऊंचाईयों तक पहुंचा है । मैं उन्हें हदय की अन्तर्तम गहराईयों से अश्रुपूरित श्रद्धांजलि देता हूँ और यह विश्वास करता हूँ, परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना भी करता हूँ कि श्री भूपेश बघेल जी को और उनके शोक संतप्त परिवार को इस असहनीय दुख को वहन करने की ईश्वर शक्ति प्रदान करे । धन्यवाद ।

अध्यक्ष महोदय :- मोहन मरकाम जी ।

श्री मोहन मरकाम (कोण्डागांव) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह सदन श्री संतोष कुमार अग्रवाल जी, शहीद भीमा मण्डावी जी, श्रद्धेय बलराम सिंह ठाकुर जी का श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा है । माननीय अध्यक्ष जी, शहीद भीमा मण्डावी जी बस्तर से आते हैं । ऐसे अतिसंवेदनशील क्षेत्र से आते हैं, मृदुभाषी, मिलनसार व्यक्तित्व के धनी, वर्ष 2008 के चुनाव, वर्ष 2013 के चुनाव, वर्ष 2018 के चुनाव, लगातार तीन चुनाव लड़े थे, मगर वर्ष 2008 के चुनाव और वर्ष 2018 के चुनाव में उन्हें सफलता मिली । अतिसंवेदनशील क्षेत्र होने के बाद भी दायित्वों, अपनी जिम्मेदारियों का वे अक्षरश: पालन करते थे । क्षेत्र के विकास में उनकी भूमिका बहुत बड़ी रही है । माननीय अध्यक्ष जी, आज राजनीतिक परिदृश्य में जो बस्तर से एक बड़ा नाम हमने खो दिया है, जो बस्तर की आवाज बनकर उभरे थे । माननीय अध्यक्ष जी, 9 अप्रैल 2019 को नकुलनार के करीब 2 किलोमीटर दूर श्यामगिरी में आई.डी. ब्लास्ट में भीमा मण्डावी जी शहीद हुये थे । कहीं न कहीं हमारे बस्तर के लिए और विधान सभा के लिए

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अपूरणीय क्षति थी । माननीय अध्यक्ष जी, उनके साथ पांच जवान जो पी.एस.ओ. थे, वे भी शहीद हुये थे, इस सदन की ओर से, दल की ओर से उन्हें भी मैं श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ । माननीय अध्यक्ष जी, भीमा मण्डावी जी, अपना सियासी कैरियर की शुरूआत एक बजरंग दल से की थी । अपने गृह ग्राम गदापाल में पंचायत सचिव संघ के अध्यक्ष के तौर पर काम किया और वर्ष 2007 तक लगातार अपने दायित्वों का निर्वहन करते रहे । वर्ष 2008 के चुनाव में वे दंतेवाड़ा से चुनाव लड़े और जीतकर आये । माननीय अध्यक्ष जी, उन्होंने वर्ष 2002 में स्नातक की डिग्री हासिल की थी और पेशे से कृषक थे । माननीय अध्यक्ष जी, वर्तमान सत्र में विधायक दल के उपनेता भी रहे हैं । अपने परिवार में माता-पिता, पत्नी ओजस्वी मंडावी के अलावा एक पुत्र अखिलेन्द्र मण्डावी है । भीमा मण्डावी जी एक राजनीतिक सफर में आगे बढ़ रहे थे, उनके परिवार के साथ दु:खों का पहाड़ हमेंशा टूटता रहा है । वर्ष 2012 में भीमा मण्डावी जी की पत्नी की सड़क हादसे में मौत हो जाती है, वहीं वर्ष 2013 में उनकी बेटी की मौत हो जाती है, आज उनका पूरा परिवार, चार बच्चे के साथ भरा-पूरा परिवार है । अध्यक्ष महोदय जी, कहीं न कहीं भीमा मण्डावी जी की यादें, इस सदन में उनकी स्मृतियां जिन्दा है । हमारे साथ वह सदस्य रहे हैं तो कहीं न कहीं सत्ता पक्ष और विपक्ष के होते हुये हम लोगों के बीच एक दूसरे के बीच आत्मीयता होती है, अपने क्षेत्र के विकास के प्रति लगन होती है, वह उनमें कूट-कूट कर भरा हुआ था । मैं, मेरे दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, श्रद्धेय श्री बलराम सिंह ठाकुर जी कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और पूर्व विधायक रहे हैं। वे लगातार दो बार के विधायक थे, बिलासपुर के दो बार के महापौर रहे हैं, पार्षद रहे हैं। 81 वर्षीय श्री बलराम सिंह ठाकुर जी का लंबे समय से बीमारी के चलते 30 अप्रैल को उनका निधन हो गया था। हम सबकी श्रद्धा और आस्था के केन्द्र मॉ महामाया के वे आजीवन ट्रस्टी रहे हैं और उसके विकास के लिए लगातार प्रयास करते रहे हैं। रतनपुर के विकास और रतनपुर को प्रसिद्धि' दिलाने के लिए उनका बहुत बड़ा प्रयास रहा है। मैं तीनों महान आत्माओं को मेरे दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे दल के नेता माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल जी की माताश्री श्रद्धेय श्रीमती बिंदेश्वरी देवी बघेल जी का भी इस बीच निधन हो गया है। वे एक समाजसेवी थीं और उसके साथ साथ लगातार लोगों की आस्था, और संघर्ष के पलों में हमारे दल के नेता को हमेशा उनका स्नेह और प्यार मिला और उन्होंने उनको आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। आज कहीं न कहीं उस मुकाम तक पहुंचने में उनके संस्कार और उनसे आगे बढ़ने की जो प्रेरणा मिली, उसी कारण आज हम सरकार में हैं। अध्यक्ष महोदय, मैं इस दल की ओर से और सदन की ओर से उन्हें भी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा (जैजेपुर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय श्री संतोष कुमार अग्रवाल जी, स्वर्गीय श्री भीमा मंडावी जी, स्वर्गीय श्री बलराम सिंह ठाकुर जी विधानसभा के सदस्य रहे और अपने कार्यकाल में केवल अपने क्षेत्र ही नहीं बल्कि अपने प्रदेश के विकास के लिए निरंतर चिन्तनशील रहे। हमने केवल एक जननायक को नहीं बल्कि एक समाजसेवक को भी खोया है और यह पूरे प्रदेश के लिए क्षति है। अभी हमारे साथ ही चुनकर आये हुए श्री भीमा मंडावी जी का निधन अत्यंत खेदजनक और दुखद रहा। वे छत्तीसगढ़ के नक्सलवाद के शिकार हुए जिसकी चिन्ता हम सब लोग सदन और सदन के बाहर करते आ रहे हैं। मैं अपने और अपने दल की तरफ से इन जननायकों को श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे सदन के नेता माननीय मुख्यमंत्री जी की माँ श्रीमती बिन्देश्वरी देवी बघेल जी का भी दुखद निधन हुआ है, उनके लिए भी मैं अपने दल की तरफ से श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं। धन्यवाद।

श्री धर्मजीत सिंह (लोरमी) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, दाऊ श्री संतोष कुमार अग्रवाल जी मध्यप्रदेश में विधायक थे। मैंने उन्हें कई बार स्वर्गीय श्री विद्याचरण शुक्ल जी के पास देखा था। मैं उनसे मिला भी था, वे बहुत सिम्पल लिविंग वाले आदमी थे। कमीज पहनते थे, धोती पहनते थे और मैंने बहुत गरिमा और गंभीरता से उनकी बात बहुत बार सुना। हालाकि मैं उनसे कोई ज्यादा राजनीतिक चर्चा नहीं कर पाया पर मैं युवा होने के नाते वहां रहता था तो सुनता था। एक सिम्पल आदमी, एक साधारण आदमी, छत्तीसगढ़ के किसानों के लिए संघर्ष करने वाला आदमी, आज मैं उन्हें अपनी श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, श्री भीमा मंडावी जी यहीं पिछले सत्र तक बैठे थे। दुनिया में सबसे ज्यादा राजनैतिक हत्या का अगर रिकार्ड कहीं है तो वह छत्तीसगढ़ में है और एक ऐसे नेता जो 40 साल के थे यहां से गये। मैं देखा था, आखिरी में उनकी बात दीपक बैज जी से हुई थी जो उस तरफ बैठते थे। वह एक ऐसे नेता थे जो वर्ष 2008 में आये थे, जो हमारे कांग्रेस के नेता प्रतिपक्ष श्री महेन्द्र कर्मा जी को पराजित करके आये थे। मतलब इतने बड़े आदमी से इतने बड़े कतके नेता को उन्होंने पराजित किया था तो उनकी योग्यता तो रही ही होगी। अध्यक्ष महोदय, बाकी विषयों पर बाद में चर्चा करें लेकिन एक होनहार युवा आदिवासियों के हित के लिए, छत्तीसगढ़ प्रदेश के हित के लिए सोचने वाले नेता को खोया है। बारूद ने कोई भेद नहीं किया। माननीय कर्मा जी नक्सलियों के विरोध में थे, वह कर्मा जी को हराये लेकिन नक्सलियों के बारूद ने कोई भेद नहीं किया। वह कर्मा जी को भी मारा, भीमा मंडावी को भी मारा। हम श्रद्धांजलि दे रहे हैं, पर हमें आगे की भी चिंता करनी होगी कि आखिर हमारे छत्तीसगढ़ को इस तरीके से खून से लथपथ होने से हम बचायें। मैं कोई राजनीतिक दृष्टि से नहीं बोल रहा हूँ, चिंतन

असंशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

की दृष्टि से बोल रहा हूं। मैं उन्हें भी अपनी श्रद्धा सुमन देता हूं। स्वर्गीय बलराम सिंह जी, हमारे परिवार के हैं । उनकी बहू श्रीमती रश्मि सिंह यहां विधायक के रूप में भी है। उनके बेटे आशीष सिंह अभी भी यहां बैठे ही हुए हैं। अध्यक्ष महोदय, बलराम सिंह बहुत जिंदा दिल आदमी थे। वे राजनीति में सक्रिय थे, विधायक बने, मध्यप्रदेश में गये। दिग्विजय सिंह से भी वैसी बात करते थे, अजीत जोगी से भी वैसी बात करते थे, भूपेश बघेल जी से भी जब मिलते थे तो वैसी ही बिंदास बात करते थे। ज्यादा लाग पलेट के भूमिका बांध के बात नहीं करना उनकी एक बड़ी विशेषता थी। अध्यक्ष महोदय, उनमें एक और खासियत थी। वह राजकपूर पिक्चर में एक एकार्डियन बजाता है, वैसा वह एकार्डियन बहुत बेहतरीय बजाते थे। गाने के बेहतरीन एकार्डियन बजाते थे। जब उनके संग हम लोग कार में बैठकर कभी घूमते रहते थे या कहीं दौरे से आते थे तो सिटी से गाना बजा कर सुनाते थे। मुंह से सिटी बजाकर पूरे गाने को बजाते थे। मतलब वह साहित्यिक कवि हृदय भी थे, कड़क भी थे, साफ-साफ बोलने वाले भी थे और महामाया की तरक्की को पूरे बिलासपुर के लोग, पूरे छत्तीसगढ़ के लोग मानते हैं कि हमारी आस्था का केन्द्र बिन्दु महामाया के विकास में उनका बहुत बड़ा योगदान है। जब वह बीमार पड़े तो उन्हें आजीवन ट्रस्ट का अध्यक्ष घोषित किया गया। यह उनके महामाया ट्रस्ट के प्रति समर्पण का प्रतीक है। ऐसे महापुरूषों के नहीं रहने से छत्तीसगढ़ को अपूर्णीय छति हुई है। माननीय मुख्यमंत्री जी के माता जी का भी निधन हुआ। हम सब बहुत व्यथित हैं। इस विषय में मैं बस इतना ही कहना चाहता हूं। बहुत बड़े-बड़े कवि और लेखकों ने कहा है कि इस दुनिया में अगर कहीं जन्नत है तो मां के पैर में है और मैं मां का बिछोह समझ सकता हूं। मुख्यमंत्री जी के इस दुख पर मैं खुद भी बहुत दुखी हूं। पूरा सदन दुखी है, पूरे प्रदेश के लोग दुखी हैं। आपके ऊपर विपत्ती का पहाड़ टूटा है उसे ईश्वर सहने की क्षमता दे और इन सभी दिवंगत आत्माओं को ईश्वर अपने चरण में जगह दे। यही कामना करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय :- श्री बृजमोहन अग्रवाल ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल (रायपुर नगर दक्षिण) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय दाऊ संतोष कुमार जी, भीमा मंडावी जी, बलराम सिंह ठाकुर जी इन तीनों सदस्यों के साथ में मुझे काम करने का अवसर मिला है। दाऊ संतोष कुमार, हम कह सकते हैं कि एक ठेठ किसान के रूप में धोती और कमीज पहनकर हमेशा छत्तीसगढ़ के लोगों की चिंता करते थे। सीधे-साधे सरल व्यक्तित्व के धनी दाऊ संतोष कुमार जी का चला जाना, हम यह कह सकते हैं कि एक ठेठ छत्तीसगढ़िया किसान का हमारे बीच से चला जाना, हम उनके प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं। भीमा मंडावी जो आज हमारे साथ यहां पर बैठे हुए दिखना चाहिए था, वह आज हमारे बीच में नहीं है। हम सबके लिए सोचने का विषय है, विचार करने का विषय है कि कब तक हमारे प्रदेश के राजनेता, राजनीतिज्ञ इस नक्सलवाद की बलवेदी पर ऐसे ही

चढ़ते रहेंगे और हम लोग इस सदन में ऐसी ही श्रद्धांजलि देते रहेंगे। यह हम सब के लिए चिंता का विषय भी है, दुर्भाग्य का भी विषय है, सोचने का विषय भी है और कुछ करने का भी विषय है। मुझे लगता है इस सदन को निश्चित रूप से आने वाले समय पर इस मामले में कुछ निर्णय करना चाहिए कि जिनको हम साल दो साल, 5, 10 साल, 3-4 महीने पहले अपने साथ में बैठे हुए देखते थे, वह किसी बीमारी से नहीं, किसी एक्सीडेंट से नहीं, वह नक्सलवाद की बलवेदी पर चढ़ जाते हैं। एक 40 साल का नवजवान, जिसके छोटे-छोटे बच्चे, नवजवान पत्नी है। आप, हम सब लोग उनके घर गये थे। आज भी उनके परिवार की माली हालत ऐसी है, जिसकी हम कल्पना नहीं कर सकते। हमको ये चिंता करनी पड़ेगी और अगर हमारे बीच से ऐसे ही होनहार, नवजवान, राजनेता जाते रहे तो शायद हमको आने वाला समय माफ नहीं करेगा। निश्चित रूप से हमारे बीच से ऐसे नवजवान का चले जाना दुःखद है। हम उनके प्रति श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री बलराम सिंह ठाकुर जी एक बड़े समाज सेवक और महामाया के पुजारी थे। लगातार उनसे बातचीत, चर्चा होना, उनको महामाया के विकास की चिंता होना, ऐसे नेता का चले जाना छत्तीसगढ़ की बहुत बड़ी क्षति है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी की माता जी, मां-मां होती है, चाहे वह किसी की भी हो और जब किसी मां का बेटा मुख्यमंत्री जैसे पद पर पहुंच जाए तो उसको और ज्यादा गर्व होता है। वह मां, मुख्यमंत्री के रूप में अपने बेटे को पद पर देखकर, हम सब के बीच से गई है निश्चित रूप से माननीय मुख्यमंत्री जी और हम सबको इसका दुःख है। हम उनके प्रति भी श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं। ओम शांति।

श्री अजय चन्द्राकर (कुरूद) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे तीन साथियों के निधन का उल्लेख है।

आदरणीय श्री संतोष कुमार अग्रवाल जी के साथ सदन में काम करने का मौका नहीं मिला। पर जब वर्ष 1990 में वह जनता दल से निर्वाचित होकर आये तो हमारा उनके साथ समझौता था, उस समय महासमुंद लोकसभा क्षेत्र में आदरणीय विद्या भईया जी लड़ रहे थे तो हम लोगों ने काफी प्रचार, उनके साथ काफी समय राजनीतिक काम किया। निश्चित रूप से बहुत ही सरल व्यक्ति थे और आज के दौर में उस तरह की एक पीढ़ी खत्म हो गई, जो हमारे जैसे लोगों के लिए हमेशा एक प्रेरणा बन सकती है। सार्वजनिक जीवन में सूचिता के जो उनके मापदण्ड हैं यदि उसको अपनाएं तो शायद हम लोग छत्तीसगढ़ की ज्यादा सेवा कर पायेंगे।

माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री भीमा मण्डावी जी का सबसे उल्लेख किया। वह इस सदन में बिल्कुल मेरे पीछे बैठते थे। वे हमारे दल के उप नेता थे। जो परिस्थितियां हैं और जिन परिस्थितियों में

असंशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

उनकी जान गई। सार्वजनिक जीवन के बड़े-बड़े लोग उस तथाकथित आन्दोलन के शिकार हुए और जब बस्तर जैसी जगह से नेतृत्व उभरता है और उन्हें हम बीच में खोते हैं तो समझ लीजिए कि हमारी लड़ाई कमजोर पड़ती है। जो हमारी लड़ाई है, वह मजबूत रहे, उसके लिए यह जरूरी है कि ऐसे हस्ताक्षर हमारे बीच में रहें, जो राष्ट्रविरोधी तत्वों के खिलाफ लड़ते रहते हैं। हमारी विचारधाराएं कुछ हो सकती हैं, पर उन विचारधाराओं के खिलाफ छत्तीसगढ़ मजबूती से खड़ा रहा।

माननीय अध्यक्ष महोदय, जब आदरणीय महेन्द्र कर्मा जी ने आन्दोलन शुरू किया। आज भूपेश बघेल जी मुख्यमंत्री हैं। वे सदन में दल के उपनेता होते थे और उसके बाद देश भर और दुनिया में एक पहचान मिली। नक्सलवाद के विरोध में उस दौरान बस्तर में बहुत सारे नेतृत्व उभरे, जिनमें अपने तरीके से उनने भी काम शुरू किया और जब उन्होंने अपने तरीके से काम शुरू किया तो उनको इस निर्वाचन प्रक्रिया में भी सफलता मिली और उन्होंने बस्तर के विकास के लिए सबसे बड़ी पंचायत के माध्यम एक आवाज से दी। लेकिन असमय शहादत और उनके परिवार की जो स्थिति है हमारा विधायक दल गया था और हम लोगों ने यह तय भी किया है कि हाऊस के चलते, हम लोग माननीय मुख्यमंत्री जी से उनके बारे में चर्चा भी करेंगे और निश्चित रूप से हम लोग समय लेकर चर्चा करेंगे कि पूरा सदन मिलकर हमारे उस साथी को जो हमने खोया है, उनके देखरेख की भी जिम्मेदारी, हमारी नैतिक जिम्मेदार बनती है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री बलराम सिंह ठाकुर जी, वर्ष 2003 से 2008 के कार्यकाल में इस सदन में उनके साथ काम करने का अवसर मिला। बहुत ही बेबाक थे, सबने उनके चरित्र की, व्यक्तित्व की विशेषताओं को रेखांकित किया है। निश्चित रूप से मैं अपनी सहमति के स्वर उसमें जोड़ता हूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आदरणीय मुख्यमंत्री जी की माता, हम सबकी माता थीं। मुख्यमंत्री जी के साथ पूरा सदन दु:खी है। निश्चित रूप से माता शब्द एक ऐसी संस्था है जिसके बारे में जितना लिखा पढ़ा जाये, जितना बोला जाये, वह कम है। मैं तो यह कहूंगा कि उन्होंने माननीय भूपेश बघेल जी की उपलब्धियों को भी देखा और उपलब्धियों को पाने के लिए जिस रास्ते पर वह चलकर आये हैं, वह मजबूती भी उस महान माता के ऑचल के तले ही विकसित हुई रही होगी, ऐसा मैं समझता हूं। क्योंकि मैं निकट से आपके कुछ पारिवारिक सदस्यों को जानता हूं। माननीय मुख्यमंत्री जी और उनके परिवार के प्रति हम अपने दल की ओर से, प्रदेश की ओर से, सबकी ओर से संवेदना व्यक्त करते हुए मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

डॉ. (श्रीमती) रेणु अजीत जोगी (कोटा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री संतोष कुमार अग्रवाल, पूर्व सदस्य अविभाजित मध्यप्रदेश विधानसभा, यद्यपि मैं उनको नहीं जानती हूं, पर उनकी सादगी, कार्यक्षमता का जो उल्लेख माननीय सदस्यों ने किया है, मैं उनके प्रति श्रद्धासुमन अर्पित करती हूं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री भीमा मण्डावी, सदस्य, हमारी छत्तीसगढ़ विधानसभा के सदस्य थे, वह दो बार चुने गये। उनके सानिध्य में रहने का मुझे सुअवसर प्राप्त हुआ। बहुत ही मिलनसार और मृदुभाषी विधायक थे। अपने क्षेत्र की आवाज हमेशा उठाते थे। झीरम घाटी की घटना के बाद ये संभवत: दूसरी घटना हुई जो हमारे विधायक दल के साथी नक्सलवाद की भेट चढ़ गये। वर्तमान सरकार के लिए चुनौती छोड़ गये हैं कि भविष्य में उस पर कैसे काबू पाया जाये और ये घटनाएं दोहराई नहीं जायें।

श्री बलराम सिंह ठाकुर जी, बिलासपुर जिले के वरिष्ठ विधायक थे। आज मैं इस सदन में बैठी हूं तो अतिशयोक्ति नहीं होगी यदि कहूं कि उसकी सुत्रधार वे ही थे। जब उपचुनाव की घोषणा हुई थी तो उन्होंने एक चुनौती देकर मुझसे कहा था, यद्यपि मैं राजनीतिक व्यक्ति तब भी नहीं थी, अभी भी मैं अपने को नहीं मानती हूं, यदि आप हार जायेंगी तो मैं विधानसभा से इस्तीफा दे दूंगा। वह शब्द हमेशा मेरे कानों में, मस्तिष्क में गूंजते रहते हैं। 1970-80 के दशक में महामाया मंदिर मात्र एक माता चौरा के स्वरूप में था, वहां दो ज्योत जलती थी और आज कहते हैं कि आदिशक्ति का एशिया का सबसे बड़ा केन्द्र है वहां नवरात्रि के पावर अवसर पर 30 हजार से अधिक श्रद्धालुओं के द्वारा ज्योत जलाई जाती है, इस सबका श्रेय मैं बलराम सिंह ठाकुर जी को देना चाहूंगी।

माननीय अध्यक्ष महोदय, अंत में हमारे मुख्यमंत्री जी की माता जी का जो आकस्मिक दु:खद निधन हुआ है, उसके लिए मैं यह कहना चाहूंगी कि उन्हीं के आशीर्वाद से संभवत: निश्चित ही आज वह इस पद को सुशोभित कर रहे हैं। इस सदन की ओर से, व्यक्तिगत अपनी ओर से मैं उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए अपनी वाणी को विराम दूंगी।

श्री अमितेश शुक्ल (राजिम) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम लोग आज श्री संतोष कुमार अग्रवाल जी, भीमा मण्डावी जी और बलराम सिंह ठाकुर जी को श्रद्धांजलि दे रहे हैं। संतोष कुमार अग्रवाल जी (दाऊ जी) को मैं अच्छी तरह से जानता था। उनसे मेरा बहुत संपर्क रहा, हमारे सब प्रबुद्ध लोगों ने विस्तार से उनके बारे में बताया। मगर अगर एक बात हम उनके बारे में नहीं बोलेंगे तो श्रद्धांजलि पूरी नहीं होगी। वे छत्तीसगढ़ संघर्ष मोर्चा के अध्यक्ष थे और उसके द्वारा उन्होंने पूरे गांव-गांव में जाकर एक अलख जगायी, छत्तीसगढ़ राज्य बनाने में उनका एक बहुत बड़ा योगदान था । छत्तीसगढ़ राज्य बना और उससे पहले उन्होंने छत्तीसगढ़ संघर्ष मोर्चा के द्वारा जबरदस्त संघर्ष किया, विद्या भैया ने मार्गदर्शन दिया था और उनके नेतृत्व में संघर्ष मोर्चा ने एक जबर्दस्त लड़ाई लड़ी और उस संघर्ष मोर्चा की लड़ाई में पार्लियामेंट में भी गये, वहां पर घेराव हुआ, जबर्दस्त अश्रु गैस छोड़ा गया, उसमें मैं भी था । वे बहुत मृदुभाषी थे, सबको इकट्ठा करके और सबको एक-साथ चलाने की उनमें एक जबर्दस्त क्षमता थी और निश्चित रूप से छत्तीसगढ़ राज्य बना है तो उसमें उनका एक बहुत महत्वपूर्ण योगदान है इस चीज को हमें याद रखना है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे श्री भीमा मण्डावी जी जो थे चूंकि एअरफोर्स में एक कहावत है कि - Only those pilot dies who are daredevil. Brave pilot are never die. तो हमारे श्री भीमा मण्डावी जी केवल साहसी ही नहीं बल्कि दुस्साहसी थे और दुस्साहस के कारण उनके पास कुछ खबरें भी थीं और इंटीलेजेंस से उनके पास कुछ सूचनाएं भी थीं उसके बाद भी वे एक दुस्साहसी तरीके से वहां पर गये जिसके कारण उन्हें अपने प्राण न्यौछावर करना पड़ा ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं श्री बलराम सिंह ठाकुर जी को बहुत अच्छी तरह से जानता हूं । मैं उनके बहुत संपर्क में रहा हूं क्योंकि हमारे परिवार से उनका बहुत स्नेह और प्रेमपूर्ण संबंध था । वे यहां पर जब भी मिलते थे, जैसा कि हमारे श्री भूपेश भाई जी ने बताया कि वे छत्तीसगढ़ी में बातें बोलते थे और वे बड़े हिम्मती थे, वे चिंता नहीं करते थे । कितने भी बड़े नेता हों, उनको जो सही बात बोलनी हो उसको बिल्कुल अपने छत्तीसगढ़ी अंदाज में जबर्दस्त तरीके से बताते थे । हम उनको भी श्रद्धासुमन अर्पित कर रहे हैं ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री भूपेश भाई जी की माता जी का जो निधन हुआ वह निश्चित रूप से हम सभी के लिये एक बहुत ही दुखद घटना है । मैं उनसे मिलने गया था, बहुत ही सौम्य, बहुत मृदुभाषी थीं । मैं उनसे मिलने गया तो वे बैठी हुई थीं और उनका व्यवहार बड़ा ही स्नेहपूर्ण था, वे हंस रहीं थीं, उनका स्वास्थ्य भी उस समय अच्छा था । मैं उनसे मिलकर बाहर निकला तो श्री भूपेश भाई के पिता जी से मुलाकात हुई, उन्होंने बड़े विस्तार से उनके बारे में उल्लेख किया और उनको सुनकर ऐसा लगा कि श्री भूपेश भाई ने बहुत सी बातें अपनी माता जी से ली हैं और निश्चित रूप से हम सब दुखी हैं । मैं श्री संतोष कुमार अग्रवाल जी, श्री भीमा मण्डावी जी, श्री बलराम सिंह ठाकुर जी एवं माता जी को अपने श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं । धन्यवाद ।

श्री शिवरतन शर्मा (भाटापारा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज हम सदन के दो पूर्व सदस्यों को और सदन के एक वर्तमान सदस्य को श्रद्धांजलि दे रहे हैं । मध्यप्रदेश विधान सभा के पूर्व सदस्य आदरणीय श्री संतोष कुमार अग्रवाल जी के साथ काम करने का अवसर तो नहीं मिला लेकिन मैं यह मानता हूं कि यदि कोई व्यक्ति अपने क्षेत्र से जनप्रतिनिधि चुनकर आया है तो समाज में और सार्वजनिक जीवन में कुछ न कुछ विशेष काम वह करता है उसके चलते वह अपनी पार्टी के द्वारा और क्षेत्र की जनता के द्वारा चुना जाता है । मैं उन्हें अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

श्री भीमा मण्डावी जी, दिनांक 09 अप्रेल को जब लैण्डमाईंस ब्लास्ट में उनकी और उनके साथ 03 सुरक्षाकर्मियों की और ड्राईवर की मृत्यु हुई तो सबसे पहले यह समाचार सोशल मीडिया के माध्यम से पता चली । एकाएक विश्वास नहीं हुआ कि भीमा हमारे बीच नहीं रहा । वे वर्ष 2008 से 2013 तक विधायक रहे, उस बार वर्ष 2018 में फिर से चुनकर आये । पार्टी में हम दोनों प्रदेश पदाधिकारी थे, हमें

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

साथ काम करने का अवसर मिला और सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि श्री भीमा मण्डावी जी घोर नक्सलवादी क्षेत्र से चुनकर आये थे लेकिन नक्सलवाद से लड़ने की मानसिकता, मुझे अपने क्षेत्र को नक्सलवाद से मुक्त करना है इस भाव से काम करना । वर्ष 2010 का लोकसभा का जो बाईइलेक्शन बस्तर में हुआ था, उस बाईइलेक्शन में दंतेवाड़ा में 10 दिन रहने का अवसर मिला और मैं और श्री भीमा मण्डावी जी पूरे दंतेवाड़ा विधानसभा के घोर नक्सली बेल्ट में उसमें कटेकल्याण भी है, कुआंकोण्डा भी है, श्यामगिरी का रास्ता जो बचेली से नकुलनार होकर जाता है, बारसुर भी है । इस तरह पूरे नक्सल प्रभावित क्षेत्र में घूमने का अवसर मिला । उनके मन में भय कहीं नहीं रहता था । सुरक्षा गार्ड साथ में है तो ठीक, नहीं है तो ठीक । वे कहते थे कि हमने पुलिस को सूचना दे दी है, वे अपना काम करेंगे और हमें अपना काम करना है, इस भाव से वे अपने क्षेत्र का दौरा करते थे । दुर्भाग्यजनक स्थिति यह है कि जब वे 2008 में चुनाव जीते तो उस समय उनका जो चुनाव संचालक था, तोमर । 2009 में नक्सलियों ने उनके चुनाव संचालक की हत्या की और 2019 में वे हमारे बीच नहीं रहे । उस घटना में तो हम विधान सभा में बाद में चर्चा करेंगे । लेकिन जैसा कि भाई अजय चन्द्राकर जी ने कहा कि उनके परिवार की हालत अच्छी नहीं है । बीजेपी का पूरा विधायक दल उनसे मिलने गया था । उस परिवार की चिंता करने की जवाबदारी हम सदन के सारे सदस्यों की है । मैं माननीय मुख्यमंत्री जी से भी व्यक्तिगत रूप से आग्रह करूंगा ।

आदरणीय बलराम सिंह ठाकुर, सदन के पूर्व सदस्य रहे । उस दबंग व्यक्तित्व के बारे में बहुत सारी बातें सदस्यों ने कही है । लोगों के किसी कार्य में कैसे मदद् की जा सकती है और नियमों से ऊपर उठकर काम कैसे कराया जाता है, उनसे सीखने लायक बात थी । मेरे साथ एक घटना घटी थी । मेरे भाटापारा का एक व्यक्ति था जो बिलासपुर शिफ्ट हुआ, कहीं किसी से कर्ज लिया और कर्ज देने वाला व्यक्ति 10 प्रतिशत का ब्याज लेता था और हमेशा ठाकुर साहब का नाम लेता था कि यदि तुम कुछ करोगे तो मैं बलराम सिंह जी के पास जाउंगा और वे तुझे टाइट कर देंगे । वह व्यक्ति परेशान होकर मेरे पास आया और मैंने ठाकुर साहब को फोन किया कि यह व्यक्ति आपके नाम का उपयोग करता है । उन्होंने मुझसे कहा कि तैं ओला लेके आबे, मैं ओला देखहूं । जब मैं उनके पास उसे लेकर गया, तो जो व्यक्ति उनके नाम का उपयोग करता था उसे इतने अच्छे ढंग से ठीक किया कि वह कर्जदार व्यक्ति कर्ज से मुक्त हुआ । दबंग पर्सनैलिटी थी, उन्हें भी अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

माननीय मुख्यमंत्री जी की माता श्रीमती बिंदेश्वरी देवी । माता की कमी कोई जिंदगी में पूरी नहीं कर सकता । मैं उन्हें भी अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए नक्सलवादी घटना में शहीद हुए 7 से 8 जवानों को भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं, धन्यवाद् ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री (श्री कवासी लखमा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे सदन के तीन महान् नेता श्री संतोष अग्रवाल, दक्षिण बस्तर से हमारे आदिवासी समाज से वर्तमान विधायक भीमा मंडावी, श्री बलराम सिंह ठाकुर हमारे बीच नहीं रहे। मैं और बलराम सिंह ठाकुर एक ही वर्ष में चुनाव जीते थे । इन तीनों महापुरूषों को मैं श्रद्धांजलि देता हूं ।

अध्यक्ष महोदय, जब भीमा मंडावी पहली बार चुनाव जीते थे तो हम उस समय एक ही जिले दंतेवाड़ा में थे । वे जंगल के एक छोटे गांव में पैदा होकर पंचायत सचिव रहकर, वे सुकमा, बीजापुर और दंतेवाड़ा तीनों जिलों के अध्यक्ष रहते हुए संघर्ष किया और वे एमएलए बने । वे 2008 में और अभी वर्तमान में विधान सभा के सदस्य थे । वे आज हमारे बीच में नहीं हैं, हमने एक आदिवासी नेता खोया है । उनकी कमी कभी पूरी नहीं की जा सकती । उनका और हमारा मामा-भांचा का रिश्ता था । वे सदैव बस्तर के विषय में बात करते थे । वे आज हमारे बीच में नहीं हैं, मैं उन्हें अपनी ओर से और अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि देता हूं ।

ठाकुर बलराम सिंह जी के साथ मैंने पहली बार मध्यप्रदेश में चुनाव जीता था। उन्हें अगर कोई बात बोलनी होती थी तो वे ठेठ ठाकुर भाषा में बोलते थे । वे हमारे बीच में नहीं है, उन्हें भी श्रद्धांजलि देता हूं ।

समय :
12:00 बजे

आज हमारे सदन के नेता की माताजी भी इसी बीच में नहीं रहीं। सबसे ज्यादा भगवान के बाद एक मां बेटे को पालने में या समाज को पालने में मदद करती है। उस बीच नहीं रहने से हम लोगों को, संपूर्ण छत्तीसगढ़ के लोगों को, हमारी पार्टी को भी इसका दुख है। हमारे मुख्यमंत्री महोदय को और उनके परिवार को भगवान से प्रार्थना करते हैं कि उन्हें शक्ति दे। धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय :- सौरभ सिंह।

श्री सौरभ सिंह (अकलतरा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आदरणीय संतोष अग्रवाल जी, पूर्व सदस्य को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। आदरणीय भीमा मंडावी जी आज हमारे बीच नहीं रहे। मेरे बगल की कुर्सी में वे बैठते थे और यह कुर्सी जीवन भर उनकी याद दिलायेगी। आज वे यहां पर नहीं हैं। उनके साथ रहकर उनकी जो निर्भीकता थी, उसे देखा है। अनेकों बार वे देरी से आते थे। मैं उनसे पूछता था कि भाई, कहां रह गये थे तो वे कहते थे कि मैं तो दंतेवाड़ा चले गया था और वहां फंस गया था। वे कई मुद्दों पर बात करते थे और सदन की गरिमा और सदन की बात करते थे। कई बार हम बोलते थे कि कि थोड़ा बोलिए तो वे बोलते थे कि नहीं-नहीं, यह ठीक बात नहीं है, मैं नहीं बोलूंगा। सदन के प्रति उनकी गरिमा थी। सदन के प्रति उनकी आस्था थी, प्रजातंत्र के प्रति उनकी आस्था थी। मुझे अभी भी

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

याद है कि डी.एम.एफ. फंड के मुद्दे को लेकर आज पेपर में कई बार यह बात आई है, इस बात का जिक्र वे कई बार मेरे बगल में बैठकर करते थे कि दंतेवाड़ा में डी.एम.एफ. फंड में गड़बड़ी हुई है। उसके साथ-साथ जीओ का नेटवर्क नहीं चल रहा है, इस चीज को बार-बार वे यहां पर बोलते थे। आज उनके परिवार के साथ, उनके साथ, हमारे सारे सदन के साथ, हमारे साथ उनकी यादें रह गयी हैं। आदरणीय बलराम सिंह जी का मेरे परिवार के साथ बहुत बड़ा नाता था। शायद मैं जिस दिन से पैदा हुआ था, तब से वे मेरे पिताजी के मित्र थे। जब से चलना सीखा है, तब से बलराम सिंह जी को देखा है। एस.बी.आर. कॉलेज के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने अपने करियर की शुरूआत की थी। वे बिलासपुर के मेयर व दो बार विधायक रहे। सारे सदस्यों ने कहा कि महामाया मंदिर का स्वरूप जो आज हम देखते हैं, वह सिर्फ बलराम सिंह जी की देन है। इसके साथ-साथ ही वे निर्भीकता से राजनीति करते थे और राजनीति के साथ-साथ उनसे बहुत सारी चीजें सीखने को मिलती थीं। कोई उनके पास जाता था तो वे बोलते थे कि ला कागज में का लिखना है? मैं तो तोर विधायक हो न। जे लिखना है, लिखवा ले ते मोर से। अउ में हा दस्तखत करथो। जिस पारिवारिक और आर्थिक पृष्ठभूमि से वे आते थे, उसके बावजूद भी कहीं भी उनमें हिचक नहीं होती थी। वे क्लर्क के पास चले जाते थे। मोर क्षेत्र के जनता के काम होही। कइसे में हो ही तेला ते बता। अब मैं बाकी कानून कायदा ला नहीं जानो। इस ढंग से राजनीति करना, इस ढंग से सेवा करना, घंटों बिलासपुर में कलेक्टर कार्यालय में पीपल के पेड़ के नीचे बैठ जाना, तोर काम ला करा दे थो। तो काम ला करा देथो। इस ढंग से उन्होंने राजनीति की। आज उनकी बहू हमारी आदरणीय दीदी उनके पदचिन्हों में आगे चल रही हैं। इस सदन की सदस्य हैं। मैं उनको श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं। आदरणीय मुख्यमंत्री जी की माता जी का भी इस दौरान देहांत हुआ है। मां की जगह दुनिया में कोई नहीं ले सकता। उनको भी मैं श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- श्रीमती रश्मि आशिष सिंह।

श्रीमती रश्मि आशिष सिंह (तखतपुर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज हमारे विधान सभा के एक वर्तमान सदस्य भीमा मंडावी जी होते थे, मैं उन्हें श्रद्धांजलि देती हूं। जैसा कि सदन के सभी सम्माननीय सदस्यगणों ने कहा कि भीमा जी के परिवार पर जो विपत्ति आयी है, उसमें सदन में कोई पक्ष-विपक्ष नहीं है। सभी एकमत से उनके परिवार के दुख को दूर करने के प्रयास में संकल्पित होंगे। स्वर्गीय संतोष अग्रवाल जी को मैं श्रद्धांजलि देती हूं। वे काफी वरिष्ठ नेता थे। जैसा कि सभी सम्माननीय सदस्यों ने कहा कि स्वर्गीय बलराम सिंह ठाकुर मेरे ससुर थे और उनकी राजनीतिक विरासत मुझे मिली है और मैं कहना चाहूंगी, जैसा कि सभी ने कहा बिलासपुर में उन्हें निर्बल के बलराम कहा जाता था। वे अपने एक छोटे से गांव से प्राइमरी शिक्षा ग्रहण करके बिलासपुर शहर आये और उन्होंने स्वयं अपनी पहचान स्थापित की। यह हमारे परिवार के लिए सौभाग्य का विषय है कि उनकी विरासत

को हमने इस उत्तराधिकार में पाया है। पारिवारिक रूप से मैं और आशिष सिंह उनके पारिवारिक विरासत में हैं, राजनीतिक विरासत में हैं, लेकिन जो सम्मान उन्हें बिलासपुर जिले में छत्तीसगढ़ में मिला, उस सम्मान को बनाये रखने की जवाबदारी भी हमारे ऊपर है। जिस तरह से सभी ने उल्लेख किया कि कल्चुरी वंश के समय की महामाया मंदिर के प्रति उनकी जो आस्था थी, जहां उस मन्दिर में एक पगडण्डी भी नहीं हुआ करता था, मां महामाया के आशीर्वाद से ही उन्होंने जीवन पर्यन्त उस मन्दिर की सेवा की। आज जो महामाया मन्दिर का विशाल रूप देख रहे हैं, जिसके लिए सभी उन्हें श्रेय दे रहे हैं, तो मैं निश्चित तौर पर कहना चाहूंगी कि यह महामाया का आशीर्वाद था, जो उन्हें मिला हुआ था, उनके अंदर जो भक्ति थी, आज इस मुकाम पर मन्दिर है। वह मां महामाया की कृपा, स्वयं मां महामाया उनसे करवाती थीं। सभी ने कहा, मैं कहना चाहूंगी कि वे बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे, वे जिन्दादिल थे। उनकी अस्वस्थता के दौरान, उनकी मृत्यु के बाद जितने भी लोग उनसे किसी न किसी रूप में जुड़े थे, उन सभी ने उनका एक सुखद संस्मरण कहते हुए स्मरण किया कि उन्होंने मेरे जीवन में ये किया, सबने ऐसी-ऐसी बातें बताई, जो उनके बताने के पहले जानते भी नहीं थे। तब हमें एहसास हुआ कि हमारी जवाबदारी बहुत ज्यादा है। अभी जिस तरह से सभी ने कहा वे सबके लिए सहज, सरल उपलब्ध थे। उन्होंने अपने व्यक्तित्व को, अपने जीवन को स्वयं स्थापित किया था। वे एक कठिन राह पर चलकर वहां तक पहुंचे थे और उनकी प्रेरणा हमें हमेशा आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेगी। मेरा पूरा प्रयास रहेगा कि उनके तखतपुर क्षेत्र की जनता की सच्ची सेवा उनके उत्तराधिकारी के रूप में मैं करूं। मुझे नहीं लगता है कि मेरे लिए उनके व्यक्तित्व को छू पाना संभव है। उन्होने जितनी कठोर तपस्या करके उस क्षेत्र को सींचा था, मैं अपनी तरफ से पूरा प्रयास करना चाहूंगी कि वैसा ही प्रयास मेरा उस क्षेत्र के लिए रहे। आप सभी का स्नेह मुझे मिला, उन्हें आप सभी का सम्मान मिला। मैं तीनों दिवंगत सदन के सदस्यों को श्रद्धांजलि देते हुए कहना चाहूंगी कि हमारे हिन्दुस्तान की संस्कृति में माता-पिता को जीवित ईश्वर माना गया है। तो यह हमारे लिए अपूरणीय क्षति है। साथ ही हमारे सदन के नेता, हमारे मुखिया आदरणीय भूपेश बघेल जी के माता जी का निधन अपूरणीय क्षति है। वह माता का ही कर्म है कि आज वे इस स्थान पर बैठे हुए हैं, हमारे मुखिया के रूप में हैं। मैं उन्हें भी अपनी श्रद्धांजलि देना चाहूंगी। सभी दिवंगत सदस्यों को श्रद्धांजलि देती हूँ।

डॉ0 रमन सिंह (राजनांदगांव) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने दाऊ संतोष अग्रवाल, श्री भीमा मण्डावी श्री बलराम सिंह ठाकुर जी के निधन का उल्लेख किया। आपकी भावना से मैं अपने आपको सम्बद्ध करता हूँ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, दाऊ संतोष अग्रवाल निश्चित रूप से एक ऐसा नाम, जिन्होंने छत्तीसगढ़ आंदोलन, छत्तीसगढ़ के निर्माण को न केवल रायपुर बल्कि दिल्ली तक रहा। दाऊ संतोष

अग्रवाल जी का नाम लगातार संघर्ष में रहा और उस आंदोलन को जीवित रखा। विशुद्ध छत्तीसगढ़िया सोच, बोली, परिधान और छत्तीसगढ़ के प्रति अद्भुत समर्पण भाव के साथ जीवन भर संघष किए, वे आज हमारे बीच नहीं हैं। मैं उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय भीमा मण्डावी, हमारे सम्माननीय सदस्य रहे, बहुत ही प्रिय सदस्य के रूप में रहे और यहां उप नेता के रूप में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका ग्राम गदापाल में जन्म हुआ। मैं उनको हमेशा बोलता था कि जिस इलाके में रहते हो, मुझे कई बार उनके गांव जाने का अवसर मिला, घोर नक्सल एरिया में सबसे दूरस्थ और कठिन एरिये में उनका निवास था। मैं उसको बोलता था कि अपना निवास दंतेवाड़ा बनाकर स्थाई रूप से रह। तो बोलता था कि मैं गदापाल के बिना मैं जी नहीं सकूंगा। उनमें काफी हिम्मत और हौसला था। राजनीति के क्षेत्र में, छत्तीसगढ़ की राजनीति में मैंने दो व्यक्ति को देखा, जिनका दुस्साहस, जिनका हिम्मत, जिनका हौसला, जिनका मुकाबला कोई नहीं कर सकता। मैंने एक स्वर्गीय महेन्द्र कर्मा जी को देखा, जो दुस्साहसी थे और नक्सलवाद के खिलाफ कट्टरता के साथ उस युद्ध में शामिल रहे। मैंने दूसरा व्यक्ति भीमा मण्डवी को देखा। वह उतनी ही मजबूती के साथ, उतने ही कठोरता के साथ उस आंदोलन को कुचलने में लगे रहे। उनमें कहीं भी डर नहीं, कहीं भी भय नहीं और कहीं निराशा का भाव नहीं था। महेन्द्र कर्मा जी और भीमा मण्डावी जी, मैंने इन दोनों को देखा है । ये दोनों अलग-अलग दल के जरूर थे, मगर नक्सलवाद के युद्ध में दोनों का विचार एक साथ रहता था और हर बात में सलाह और आपस में बैठकर बात भी करते थे । मैंने ये अद्भूत तालमेल और सामंजस्य देखा । एक इश्यू को लेकर दोनों एक साथ इस क्षेत्र में काम करते रहे और मुझे लगता है कि उस व्यक्ति की कमी निश्चित रूप से पूरी नहीं हो सकती क्योंकि एक छोटे से पंचायत के सचिव से राजनीतिक जीवन शुरू किया, संघ में काम किया, भारतीय जनता युवा मोर्चा, भारतीय जनता पार्टी में काम किया, दो बार विधायक बने और विधायक बनने के बाद भी उस क्षेत्र के विकास, पानी की समस्या हो, लाल पानी की समस्या हो, वहां के एन.एम.डी.सी. के रोजगार की समस्या हो, वहां पर सी.एस.आर. मद में काम करने की बात हो, एक-एक विषय को जानकारी लेकर और उस क्षेत्र में डेव्हपलमेंट के एक-एक काम करवाने में भीमा मण्डावी लगातार लगे रहे । निश्चित रूप से हम उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय बलराम सिंह ठाकुर जी तो हमारे परिवार के सदस्य थे और जीवन भर राजनीतिक दल में अलग-अलग जरूर रहे, मगर जब भी मैं उनके पास जाता था तो वे एक वरिष्ठ राजनीतिज्ञ की तरह, एक बड़े भाई की तरह हमेशा उनका सुझाव और सलाह मिलता रहा और बहुत ही निर्भीक, बेबाक बोलने वाले एक प्रकार से अजातशत्रु जिसका कोई दुश्मन नहीं और मां महामाया

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

के अद्भूत भक्त थे । उन्होंने रतनपुर के महामाया ट्रस्ट के प्रमुख के रूप में जो विकास किया, वह उनकी श्रद्धा थी । उनके प्रति भी मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, इस बीच माननीय मुख्यमंत्री जी की माता जी का भी निधन हुआ, उनके प्रति भी मैं अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और सभी दिवंगतों के प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और ईश्वर उन्हें अपने चरणों में स्थान दे और निश्चित रूप से उनके परिजनों को इस कष्ट को सहने की क्षमता दे, ऊं शांति ।

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- माननीय अध्यक्ष जी, हम सदन में जिन तीनों नेताओं को श्रद्धांजलि दे रहे हैं । जब हम अपने छत्तीसगढ़ अस्मिता की बात करते हैं तो तीनों का चेहरा, तीनों का रहन-सहन, तीनों का व्यक्तित्व, तीनों का फक्क्ड़पन ये हमारे छत्तीसगढ़ का मूल चरित्र है । हम लोग संतोष दाऊ के साथ भी विधान सभा में 90 में बैठते थे, आम ग्रामीण जिस तरीके से वेशभूषा में रहता है, वे अपनी बात को बेहद निश्छल मन से न केवल सदन में, सदन के बाहर भी जैसे कहते हैं और इन तीनों को हमने कभी भी हिन्दी में बोलते हुए सुना ही नहीं है । संतोष अग्रवाल जी भी ठेठ छत्तीसगढ़ी में बात करते थे, माननीय बलराम सिंह जी तो मैं समझता हूं कि छत्तीसगढ़ी के अलावा ज्यादा कुछ बोलते ही नहीं थे और भीमा तो हम सबके बीच में बेहद हंसमुख चेहरा थे । पिछली विधान सभा सत्र में भीमा सामने बैठा करते थे, दीपक बैज और मोहन मरकाम के साथ जिस तरीके से उनकी बहस होती थी, लेकिन हंसते हुए हर बात को कहने की आदत भीमा में थी । जब लोग उधर विपक्ष में बैठते थे तो जब भीमा पहली बार चुनकर आये तो पक्ष में इधर बैठते थे और जब हम लोग इधर बैठे तो भीमा का चेहरा सामने देखते थे । माननीय अध्यक्ष जी, तीनों का व्यक्तित्व लगभग एक सा था। संतोष दाऊ जनपद के अध्यक्ष रहे। उस जमाने में जनपद का अध्यक्ष होना भी ग्रामीण राजनीति का सबसे बड़ा आधार हुआ करता था । वे मंडी के लगातार अध्यक्ष थे । उस जमाने में मंडी के अध्यक्ष का निर्वाचन भी किसानों से बैठकर तय किया जाता था तो इसका मतलब है कि ग्रामीण राजनीति की पृष्ठभूमि में वे कितने अग्रणी थे । मध्यप्रदेश की विधान सभा में 90 में एक मात्र कार्यकाल उनका था, वे उस समय शायद जनता दल से चुनकर आये थे। हम लोग भी 90 में विपक्ष में हुआ करते थे, वे हमारे करीब ही बैठा करते थे, उनका जाना निश्चित रूप से हम सबके लिए क्षति है ।

माननीय अध्यक्ष जी, भीमा जी के बारे में कहना चाहूंगा । हमारा छत्तीसगढ़ एक बहुत बड़ी समस्या से ग्रसित है । हम लोगों ने इस सदन में क्लोज़डोर मीटिंग भी की थी, इस सदन में कई बार नक्सल मुद्दे पर चर्चा भी की, हम लोगों ने शहादत के बारे में चिन्ताएं व्यक्त कीं, जब उधर भी बैठते थे, तब भी और मध्यप्रदेश की विधान सभा में थे, तब भी और यहां भी बैठे हैं तो भी चिन्ता का हमारा कारण है कि आखिर कब तक हम अपने जन नेताओं को इस तरीके से खोते रहेंगे, कब तक बस्तर की

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

धरती लाल होती रहेगी ? कब तक वहां नरसंहार चलता रहेगा ? कब तक वहां खून बहती रहेगी ? अध्यक्ष महोदय, आखिर कभी न कभी वहां रोक करना जरूरी है । हम लोगों ने तब भी कुछ सुझाव दिये थे, आज भी उसमें मनन करने की आवश्यकता है । उधर जब बैठा करते थे, हमारे पड़ोस में आदरणीय भाई नंदकुमार जी बैठा करते थे, हमारे नेता प्रतिपक्ष के रूप में आदरणीय महेन्द्र कर्मा जी बैठा करते थे । आखिर इतने बड़े-बड़े नेता 34 शहादत एक साथ झीरम घाटी में और उसके बाद भीमा मण्डावी जैसे नवजवान साथी की हत्या हुई है माननीय अध्यक्ष महोदय । यह बेहद चिन्ता का विषय है । यह केवल छत्तीसगढ़ के लिए चिन्ता का विषय है, ऐसी बात नहीं है । यह हिन्दुस्तान के लिए चिन्ता का विषय है । देश में सारी बातें राजनीति की हो सकती है अध्यक्ष महोदय, लेकिन हमारे जनप्रतिनिधि अगर जनता के लिए काम कर रहे हैं, आदिवासियों के लिए काम कर रहे हैं, वनवासियों के लिए काम कर रहे हैं, अपने क्षेत्र के विकास की बात अगर सोचते हैं और इस तरह से उनको मौत के मुंह में जाना पड़े, यह हम सब के लिए बड़ी चिन्ता का कारण है, भीमा का हंसमुख चेहरा हमेंशा हम लोगों को याद रहेगा । उनको भी मैं श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ ।

ठाकुर बलराम सिंह जी, हम सब के पारिवारिक सदस्य थे । माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी जितने भी वक्ताओं ने अपनी बात कही, सब ने कहा कि ठाकुर बलराम सिंह जी हमारे परिवार के सदस्य थे । आदरणीय भाभी जी ने कहा, आदरणीय जोगी जी ने कहा, डॉ.रमन सिंह जी ने कहा, हमारे आदरणीय सदन के नेता ने कहा । उनका व्यक्तित्व इसी आधार पर तय कर सकते हैं । किसी को भी हदय से टच करने वाले व्यक्तित्व हुआ करते थे । हमने तो कभी माननीय अध्यक्ष महोदय, उनके मुंह से गालियां भी निकलती थी, लेकिन इतना प्रेम से वह गाली देते थे, सामने वाले को लगता था कि इनकी गाली एकाध बार और सुन लिया जाये । बलराम सिंह जी इतना मीठे शब्द में बोला करते थे । अपने क्षेत्र के प्रति उनकी जागरूकता, जिस तरह से हम सब ने रतनपुर महामाया के बारे में अपनी बात कही, हम लोग लगातार, वर्षों-वर्षों से रतनपुर जाते रहे हैं । ठाकुर साहब को हम लोगों ने वहां बैठे भी देखे हैं, हम लोगों ने पूजा करते भी देखे हैं, विकास तो हम लोगों ने देखा है। सम्माननीय अध्यक्ष महोदय, उनका बड़ा योगदान था, धार्मिक कार्यों में बड़ी रूचि थी, छत्तीसगढ़ के प्रति उनके हदय में अगाध श्रद्धा थी । उनका सोचना था, मूल छत्तीसगढ़ियों का विकास छत्तीसगढ़ में किस तरीके से किया जा सकता है ? इसलिए उनका जाना हम सब लोगों के लिए अपूरणीय क्षति है । इन तीनों दिवंगत आत्माओं को मैं श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ । आदरणीय भूपेश जी, हमारे सदन के नेता हैं, मुख्यमंत्री जी की माता का देहावसान हुआ है, हम लोग माता को भगवान का दूसरा रूप मानते हैं, व्यक्तित्व में जो कुछ भी हम लोग देख पाते हैं, ऐसा मैं मानकर चलता हूँ कि उसमें माता का बड़ा योगदान है । जिन छत्तीसगढ़िया स्वभाव के तीनों नेताओं की मैंने बात किया, भूपेश जी में भी वह अक्खड़पन है । वह

छत्तीसगढ़िया स्वभाव है, इस मिटटी के प्रति प्रेम है । यहां के विकास की ललक है । यह सब कुछ उनमें जो संघर्ष करने का माददा है, यह सब कुछ अगर हमने देखा है तो यह हम मानकर चलते हैं, उसमें माता का बहुत आर्शीवाद है । उनका जाना भी हम सब लोगों के दु:ख का कारण है । उन्हें मैं श्रद्धांजलि अर्पित करता हूॅ । सभी दिवंगतों के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित करता हूॅ ।

अध्यक्ष महोदय :- मैं सदन की ओर से शोकाकुल परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हूॅ । साथ ही सदन के नेता श्री भूपेश बघेल की मातोश्री श्रीमती बिन्देश्वरी देवी के प्रति भी हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हूॅ । दिवंगतों के सम्मान में अब सदन दो मिनट मौन धारण करेगा ।

(सदन द्वारा खड़े रहकर दो मिनट का मौन धारण किया गया)

अध्यक्ष महोदय :- दिवंगतों के सम्मान में सदन की कार्यवाही सोमवार, दिनांक 15 जुलाई, 2019 को 11.00 बजे दिन तक के लिए स्थगित ।

(अपरान्ह 12.21 बजे विधान सभा की कार्यवाही सोमवार दिनांक 15 जुलाई 2019 (आषाढ़ 24, शक संवत 1941) के पूर्वाहन 11.00 बजे दिन तक के लिए स्थगित की गई ।)

रायपुर (छत्तीसगढ़)
दिनांक : 12 जुलाई 2019

चन्द्र शेखर गंगराड़े
सचिव
छत्तीसगढ़ विधान सभा

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं